पलि पलि कनि पुकार, कुठा दरिद फिराक जा,
पसण काणि पिरींअ जे, रुअनि ज़ारौं ज़ार,
सामी चए सरीर जी, रखनि कान संभार,
आउ मिलु जानी यार, न त ड्रियूं था दमु दर्द में.

प्रियतम परमात्मा के विरह से दुखी जनों की दशा का वर्णन करते हुए सामी साहब कहते हैं, ''प्रियतम परमात्मा के विरह में पीड़ित जन हर क्षण प्रभु को पुकार रहे हैं। प्रियतम परमात्मा के दर्शन के लिए रोते-बिलखते रहते हैं। वे ऐसे दीवाने बन गये है कि उन्हें अपने शरीर की भी सुध-बुध नहीं है। वे पुकार कर कह रहे हैं कि हे प्रभु, तुम जल्द आकर हमसे मिलो, नहीं तो हम तुम्हारे विरह की पीड़ा में दम तोड़ देंगे। (मर जाएँगे।)''

प्रियतम परमेश्वर के प्रेम का बाण जब भक्त के हृदय में बिंध जाता है, तब भक्त का हृदय घायल हो जाता है और वह तब तक तड़पता रहता है, जब तक उसे परमेश्वर के दर्शन नहीं होते। वह रोता रहता है, प्रियतम की राह निहारते निहारते आँसू बहाता रहता है। प्रभु को पुकारते पुकारते उसकी जीभ छिल जाती है। विरह की वेदना मानो उसे मार ही डालती है। ऐसी वेदना या पीड़ा का अनुभव संत मीराबाई ने भी किया है और गोपियों ने भी। 'ए री, मैं तो प्रेम दीवानी, मेरा दरद न जाने कोउ।' कहने वाली मीराबाई श्रीकृष्ण के विरह में तड़पती दिखाई देती हैं। श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियाँ उनके विरह में रो-रो कर पागल-सी बन जाती है। प्रियतम परमेश्वर के बिना उनकी दशा शोचनीय बन जाती है। वे प्रतिक्षण श्रीकृष्ण को पुकारती रहती हैं।

सामी साहब ने जिन प्रेमी भक्तजनों की अंतर्दशा का वर्णन किया है, वे भी परमात्मा के दर्शन के प्यासे हैं। वे विरहावस्था में पीड़ा और वेदना का अनुभव कर रहे हैं। सदा रोते रहते हैं। प्रभु-मिलन की आस के सिवाय उनकी और कोई अभिलाषा नहीं है। वे संत मीराबाई समान 'प्रेम-दीवाने' है। उन्हें अपने शरीर की भी सुधि नहीं है। केवल पुकार रहे हैं- 'हे प्रभु ! जल्दी आओ। नहीं तो तुम्हारे विरह में हमारे प्राण निकल जाएँगे।' मीराबाई के शब्दों में,

पिया बिन रहयो न जाय।
तन मन मेरे पिया पर वारूं, बार-बार बलि जाय।।
निसदिन जोऊं बाट पिया की, कब रे मिलोगे आय।।
मीरा के प्रभु आस तुमारी, लीज्यौ कंठ लगाय।।

■